विचार बिन्दु

देह एक रथ है, इन्द्रिय उसके घोड़े, बुद्धि सारथी और मन लगाम है। केवल देह पोषण करना आत्मघात है। –ज्ञानेश्वरी

चुनाव, मीडिया व मतदाता

देश के पाँच राज्यों में वहां की विधान सभा के लिये चुनाव होने जा रहे हैं। अनेक राजनैतिक पार्टियां चुनाव मैदान में हैं। चुनावों में जातिवाद, धर्म निरपेक्ष ताकतें, आरक्षण, हिन्दुत्व, भू-माफिये, पूंजीपति सभी सक्रिय होकर खलनायक के रूप में मतदाता के सामने, चुनाव दंगल को नया रंग देने पर तत्पर दिखाई दे रहे हैं। मतदाताओं को भ्रमित करना चाहते हैं। मतदाता चौराहे पर खड़ा है, भ्रम में है, कहां जावे सोच रहा है। यों गत चुनावों ने यह सिद्ध कर दिया है भारत का मतदाता समझदार है। वह जानता है दागी लोग फिर न आ जावें। उसे चिन्ता है कहीं वे आ गये तो देश का सौहार्द्र बिगड़ जावेगा। वह तो समता, समरसता व समानता में विश्वास रखता है विकास चाहता है, आगे बढ़ना चाहता है। उसे डर है सभी तथाकथित धर्म निरपेक्ष ताकतों से। उसे विश्वास है संविधान की उद्दात भावनाओं में, जिनका संकल्प संविधान की उद्देशिका में उनने स्वयं लिया है। उसके इस संकल्प में राजनीति हावी होना चाहती है। ये ताकतें भ्रम पैदा करने को आमादा हैं। चुनाव आयोग नये नये प्रयोग कर अपेक्षा कर रहा है, चुनाव निष्पक्ष हों। चुनावों में डिजीटलाइजेशन का प्रयोग होगा। कई प्रतिबंध लगाये गये हैं, क्योंकि कोरोना व उसके वैरिएंट की महामारी का खतरा पैर पसार चुका है। अन्नदाता भी चुनावों में अपनी राजनैतिक भूमिका अदा करने पर तत्पर हैं।

चुनाव एक संवैधानिक प्रक्रिया है। मतदान मतदाता का अधिकार है। मत देने के हेतु निर्णय लेना अभिव्यक्ति का मूल अधिकार है। मतदाता जागृत है वह सोचता है, उसके लिये कानून बनाने वाला आदमी कौन है? क्या वह चरित्रवान है, पढ़ा-लिखा है, सुसंस्कृत है? क्या उसका विश्वास जातिवाद में है? क्या वह धर्म निरपेक्ष है? क्या वह जातिवाद, वंशवाद, लिंगभेद का विरोधी है? क्या उम्मीदवार उन कर्त्तव्यों की पालना कर रहा है, जिनका उल्लेख संविधान के अनुरूप 51क में दिये हैं?

चुनाव तो 1951 से ही हो रहे हैं, और चुनाव कानून भी लगभग वही है। मतदाताओं को पहले भी लुभाया जाता था, किन्तु तरीका भिन्न था। कुछ समय से एक नये तरीके को काम में लिया जा रहा है। अब जब चुनाव का समय होता है, राजनैतिक पार्टियां बढ़-चढ़ कर कई सेवाओं का मुफ्त में देने की घोषणायें करती हैं। कोई बिजली-पानी मुफ्त देता है, कोई अनाज, तो कोई केश ग्रान्ट, स्कूटी, टेबलेट व न जाने क्या-क्या। जनता तमाशा देखती है। कोई नहीं पूछता यह पैसा कहां से आयेगा। जनता का पैसा और जनता को ही दान। ऐसा प्रतीत होता है, जनता हर चीज मुफ्त में चाहती है। जनता को निकम्मा बना देगी ये राजनैतिक पार्टियां। समय है, इस प्रवृत्ति पर लगाम लगाने का। यही समय है जब हमें अपने को भी बदलना होगा। कानून को भी बदलना होगा। लोग अधिकारों की बात करते हैं, किन्तु संविधान में जो मूल कर्त्तव्य दिये हैं, उनकी बात कोई नहीं करता है, उनकी उपेक्षा अवश्य हो रही है। धर्म व जाति वाद बेरोजगारी व मंहगाई चुनावों में हावी है कानून प्रभावशाली नहीं है। चुनावों में सर्वोच्च न्यायालय व चुनाव कमीशन ने उम्मीदवार को रिजेक्ट करने का अधिकार दिया, किन्तु इसका प्रयोग नगण्य है।

चुनाव में खड़े होने वाले व्यक्ति के लिये आवश्यक है वह शपथ पत्र भरकर घोषणा करेगा कि वह किसी केस में सजायाफ्ता नहीं है और न गम्भीर अपराध में उसके विरूद्ध चार्ज लगाया गया है। उसकी मय परिवार कितनी सम्पत्ति है। वह योग्य व्यक्ति है और उसकी योग्यता क्या है? फार्म में इन बातों को भरना होगा। इनकी जांच भी होगी, किन्तु इसका अभिप्राय इतना ही है कि झूठे तथ्य पाने पर उसे फौजदारी सजा अपराध के लिये हो सकती है, चुनाव पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा। क्या यह कार्यवाही कागजी मात्र नहीं है? समझ से परे है कि क्यों नहीं उम्मीदवार के लिये योग्यता का मापदण्ड निश्चित कर दिया जावे? यह योग्यता मानी जावे कि चुनाव वही लड सकता है जो अच्छा पढ़ा-लिखा हो व जिसने संविधान के अनुच्छेद 51क के अनुसार अपने कर्त्तव्यों की पालना की है।

मतदान आपका अमूल्य अधिकार है, सोचो कहीं आप अपनी तकदीर को तो नहीं बेच रहे हो। आपकी समझदारी से ही अच्छी सरकार को जो विकासशील हो, भ्रष्टाचार मुक्त हो, पढ़े-लिखों की तथा चरित्रवान व्यक्तियों की हो, तथा संविधान के प्रति निष्ठावान हो व मूल कर्त्तव्यों के प्रति दृढ़ संकल्प हो, लानी होगी।

दिनांक 2 जनवरी 2017 को 7 जजों की पीठ ने 4-3 के बहुमत से निर्णय दिया है वह स्पष्टत: शंका से ग्रसित है। किन्तु दोनों निर्णयों में यह स्पष्ट रूप से माना कि धर्म, जाति के नाम पर वोट मांगना और देश में द्वेषता का वातावरण स्थापित कर एक दूसरे के प्रति घृणा की प्रवृत्ति उत्पन्न करना सर्वथा अनुचित आचरण है और यदि कोई ऐसा करता है तो निश्चित ही उनका कृत्य करप्ट प्रेक्टिस है और ऐसे व्यक्ति का निर्वाचन रद्द होना चाहिये। बहुमत के निर्णय को जन प्रतिनिधित्व कानून में आवश्यक संशोधन कर सार्थक व उपयोगी बनाना चाहिये।

लोकतंत्रात्मक गणराज्य (डेमोक्रेसी) में प्रिन्ट व इलेक्ट्रोनिक मीडिया का अपना स्थान है, उसे न्यायिक व्यवस्था, विधायिका व एक्जीक्यूटिव के बाद चतुर्थ स्तम्भ का स्थान दिया है। सबल, सुसंगठित और समाजवादी धर्म निरपेक्ष प्रेस, जनता का सजग प्रहरी है। मीडिया का कर्त्तव्य है कि वह स्वयं अपने स्व:विवेक से काम करे। इलेक्शन के समय प्राय: यह सुनने को मिलता है कि कुछ अखबार अपनी स्पेस बेच रहे हैं तथा सनसनी खेज खबरों का अधिक महत्व दे रहे हैं, मीडिया के प्रति यह आलोचना हो, यह उचित नहीं है। याद रहे, मीडिया जनता की आंख व कान होता है वह जनता के हितैषी है। मतदाता को सही रास्ता बताने का कार्य मीडिया ही कर सकता है। मीडिया का कर्त्तव्य है कि वह कानून की, चुनाव आयोग के निर्देशनों की, न्यायालय के निर्णयों की सही जानकारी मतदाताओं तक पहुंचाये। मीडिया ही है जो समाज को सुधार सकता है, सामाजिक परिवर्तन ला सकता है और मतदाता को सही व्यक्ति को चुनने में अपनी सकारात्मक भूमिका निभा सकता है। नये भारत का निर्माण कर सकता है।

मतदाता को अपने सांसद/विधायक को चुनना है इसलिये आवश्यक यह है कि वह यह तो अपेक्षा करेगा ही कि उसके हेतु कानून बनाने वाला व्यक्ति पढ़ा-लिखा है, विवेकशील है, संविधान की समझ रखता है, तथा शुद्ध चरित्र का व्यक्ति है। मतदाता से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने मत का प्रयोग किसी लाभ के बिना किसी प्रलोभन व दबाव के करेगा।

चुनाव के समय यह सुनने को मिल रहा है बीजेपी के विधायक, विपक्ष की पार्टियों में जा रहे हैं और कांग्रेस समाजवादी पार्टियां अन्य पार्टी के विधायक बीजेपी में जा रहे हैं। यह ट्रेन्ड उचित नहीं है। ऐसे व्यक्तियों के संबंध में जो लगभग पांच वर्ष तक विधायक रहने के बाद यह कह रहे हैं कि पार्टी ने जाति विशेष के हेतु कोई काम नहीं किया उन्हें कानून बनाकर अथवा वर्तमान कानून में संशोधन कर डिसक्वालीफाई किया जाना चाहिये कि वे अन्य पार्टी के टिकिट पर चुनाव नहीं लड़ सकेंगे, न सदस्य ही बनेंगे और इन्हें विधायक की पेंशन से वंचित किया जाना चाहिये। गणतंत्र में दलबदलुओं के लिये कोई स्थान नहीं होना चाहिये। यदि कोई व्यक्ति पार्टी छोड़ना चाहता है तो उसके एक वर्ष बाद पार्टी छोड़नी होगी, और वह पेंशन का अधिकारी नहीं होगा। यों मेरी धारणा तो यह है कि सांसदों/विधायकों को पेंशन दिया जाना संवैधानिक नहीं है।

हमारा अपना संविधान है। राष्ट्र धर्म निरपेक्ष है। यहां रूल ऑफ लॉ की व्यवस्था है। देश के लोगों ने धर्म निरपेक्षता को संविधान में ऊँचा स्थान दिया है, किन्तु हम बनते जा रहे हैं धर्म विहीन। हमारा धर्म व कर्म सभी अपनी नीति खो चुके हैं। राजनीति धर्म व जातिवाद में बंट गई है। भ्रष्टाचार मय जीवन ही कला बनता जा रहा है। राजनीति आधार हीन है। देश को प्रगति पथ पर विकास की ओर ले जाना है तो जन जन को शिक्षित करना ही होगा। अब तक राजनैतिक दलों ने जनता को आरक्षण व पिछडों को अशिक्षित रखकर वोटों की राजनीति की है। हमें शिक्षित सांसदों/विधायकों को जो चरित्रवान हैं उन्हें संसद/विधान सभा में भेजना है। भ्रष्टाचार समाप्त करना है।

हे! देश के मतदाताओं जरा सोचो ये मुफ्त सुविधाओं के वायदे व लोभ केवल मात्र स्वार्थ के हेतु हैं, ये हमें बेकार बना देंगे। अपनी मेहनत पर विश्वास करो। बिजली, पानी, निवास, अन्न, शिक्षा व स्वास्थ्य की रक्षा यह सब देना गरिमा मय जीने के अधिकार में आते हैं और राज्य का कर्त्तव्य है कि ये सब आपको प्राप्त हों। अच्छी सरकार चुनों ये सुविधायें आपको प्राप्त होंगी ही। कैसे राज्य करेगा, यह राज्य का दायित्व है। मतदान आपका अमूल्य अधिकार है, सोचो कहीं आप अपनी तकदीर को तो नहीं बेच रहे हो। आपकी समझदारी से ही अच्छी सरकार को जो विकासशील हो, भ्रष्टाचार मुक्त हो, पढ़े-लिखों की तथा चरित्रवान व्यक्तियों की हो, तथा संविधान के प्रति निष्ठावान हो व मूल कर्त्तव्यों के प्रति दृढ़ संकल्प हो, लानी होगी। जहां हिंसा को कोई स्थान न हो बन्धुत्व की भावना हो तथा प्राणी मात्र के प्रति करूणा की भावना हो व पर्यावरण की रक्षा का संकल्प हो।

जय हिन्द !

–अतिथि सम्पादक
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

दीवान टोडर मल जैन–अभूतपूर्व त्याग की मिसाल

हाल ही में सिखों के दसवें गुरु श्री गोविन्द सिंह जी के छोटे साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह, बाबा फ़तेह सिंह और माता गुजरी जी के क़ुर्बानी को नमन करते हुए प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रति वर्ष 26 दिसम्बर को वीर बाल दिवस मनाने की घोषणा की है परन्तु दीवान टोडर मल जैन द्वारा राष्ट्र और धर्म के लिए गए त्याग एवं बलिदान को भुला चुके हैं।

खालसा पंथ की स्थापना के बाद मुगल शासकों, सरहिंद के नवाब वजीर खां के आक्रमण के बाद 20-21 दिसंबर 1704 को मुगल सेना से युद्ध करने के लिए गुरु गोबिंद सिंह जी ने परिवार सहित श्री आनंदपुर साहिब का किला छोड़ा। सरसा नदी पर गुरु गोबिंद सिंह जी का परिवार जुदा हो गया। बड़े साहिबजादे अजीत सिंह, जुझार सिंह गुरु जी के साथ रह गए, जबकि छोटे बेटे जोरावर सिंह और फतेह सिंह माता गुजरी जी के साथ थे। रास्ते में माता गुजरी जी को गंगू मिला, जो किसी समय पर गुरु महल की सेवा करता था। नौकर गंगू उन्हें बिछड़े परिवार से मिलाने का भरोसा देकर अपने घर ले गया। इसके बाद सोने की मोहरों के लालच में गंगू ने वजीर खां को उनकी खबर दे दी। वजीर खां के सैनिक माता गुजरी और 9 वर्ष के साहिबजादा जोरावर सिंह और 6 वर्ष के साहिबजादा फतेह सिंह को गिरफ्तार करके ले आए। उन्हें लाकर ठंडे बुर्ज में रखा गया और उस ठिठुरती ठंड से बचने के लिए कपड़े का एक टुकड़ा तक ना दिया।

रात भर ठंड में ठिठुरने के बाद सुबह होते ही दोनों साहिबजादों को वजीर खां के सामने पेश किया गया, जहां उन्हें इस्लाम धर्म कबूल करने को कहा गया। लेकिन गुरु जी के दोनों बेटों ने इनकार कर दिया। उन्हें सिर झुकाने के लिए कहा तो दोनों ने जवाब दिया

डॉ. पी. सी. कंठालिया

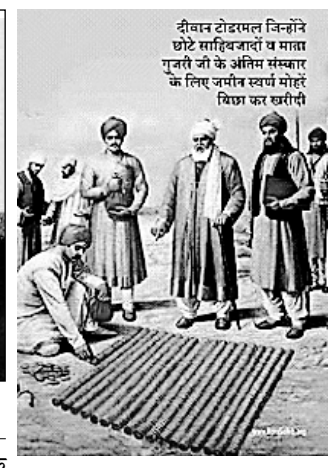

कि हम अकाल पुरख और अपने गुरु पिता के अलावा किसी के भी सामने सिर नहीं झुकाते। वजीर खां ने दोनों को काफी डराया, धमकाया और प्यार से भी इस्लाम कबूल करने के लिए राजी करना चाहा, लेकिन दोनों अटल रहे। आखिर में दोनों साहिबजादों को जिंदा दीवारों में चुनवाने का आदेश दिया। सिरहिन्द के फतेहगढ़ साहिब में दोनों साहिबजादों को जीवित ही दीवार में चुनवा दिया दोनों साहिबजादों की शहीदी की खबर सुनकर माता गुजरी जी ने प्राण त्याग दिए। गुरुद्वारा श्री फतेहगढ़ साहिब उस स्थान पर खड़ा है जहां दो साहिबजादों एवं माता गुजरी की 12 दिसंबर, 1705 के दिन क्रूर हत्या की गई थी। वर्तमान कैलेंडर के अनुसार 26 दिसंबर को आता है। साहिबजादों के त्याग की वीर गाथा आप-हम सबने कही न कहीं सुनी होगी पर दीवान टोडर मल जैन की अनुठे त्याग के बारे में बहुत कम को जानकारी है।

दीवान टोडर मल जैन, जो कि इसी क्षेत्र (सिरहिन्द, पंजाब) के एक धनी व्यक्ति थे, सामाना में जन्मे टोडरमल जैन जमीनी मामलों के जानकार होने के कारण सरहिंद के नवाब वजीर खां के दरबार में दीवान के पद पर असीन थे टोडर मल जैन ने राष्ट्र और धर्म के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझते हुए गुरु गोविंद सिंह जी एवं उनके परिवार के लिए अपना सब कुछ क़ुर्बान करने को तैयार थे। उन्होंने वज़ीर खान से साहिबज़ादों के पार्थिव शरीर की माँग की, और वह भूमि, जहाँ वे शहीद हुए थे वहीं पर उनकी अंत्येष्टि करने की इच्छा प्रकट की। टोडर मल जी ने कई बार वजीर खान से मन्नते की परन्तु उसने भूमि देने से साफ़ मना दिया बार-बार अनुरोध करने पर वज़ीर खां ने धृष्टता दिखाते हुए भूमि देने के लिए एक अटपटी और अनुचित माँग रखी। वज़ीर खां ने माँग रखी कि इस भूमि पर सोने की मोहरें बिछाने पर जितनी मोहरें आएँगी वही इस भूमि का दाम होगा दीवान टोडर मल जी जैन ने अपने सब भंडार ख़ाली करके जब मोहरें भूमि पर बिछानी शुरू की तो वज़ीर खां ने धृष्टता की पराकाष्ठा पार करते हुए कहा कि मोहरें बिछा कर नहीं बल्कि खड़ी करके रखी जाएँगी ताकि अधिक से अधिक मोहरें वसूली जा सकें। दीवान टोडर मल जी जैन ने अपना सब कुछ बेच-बाच कर और मोहरें इकट्ठी कीं और 78,000 सोने की मोहरें देकर चार गज़ भूमि को ख़रीदा ताकि गुरु जी के साहिबज़ादों का अंतिम संस्कार वहाँ किया जा सके विश्व के इतिहास में ना तो ऐसे त्याग की कहीं कोई और मिसाल मिलती है, ना ही किसी भूमि के टुकड़े का इतना भारी मूल्य कहीं और आज तक चुकाया गया।

गुरु गोविन्द सिंह जी को जब बाद में इस बारे में पता चला तो उन्होंने दीवान टोडर मल जैन से कृतज्ञता प्रकट की और उनसे कहा कि वे उनके त्याग से बहुत प्रभावित हैं, और उनसे इस त्याग के बदले में कुछ माँगने को कहा। दीवान टोडर मल जी जैन ने गुरु जी से कहा कि यदि कुछ देना ही चाहते हैं तो कुछ ऐसा वर दीजिए कि मेरे घर पर कोई पुत्र ना जन्म ले और मेरी वंशावली यहीं मेरे साथ ही समाप्त हो जाए। इस अप्रत्याशित माँग पर गुरु जी सहित सब लोग हक्के-बक्के रह गए। गुरु जी ने दीवान जी से इस अद्भुत माँग का कारण पूछा तो दीवान जी का उत्तर ऐसा था जो रोंगटे खड़े कर दे। दीवान टोडर मल जैन ने उत्तर दिया कि गुरु जी, यह जो भूमि इतना महंगा दाम देकर ख़रीदी गयी और आपके चरणों में न्योछावर की गयी, मैं नहीं चाहता कि कल को मेरी आने वाली नस्लों में से कोई कहे कि यह भूमि मेरे पुरखों ने ख़रीदी थी। यह थी राष्ट्र एवं धर्म के लिए किये गए नि:स्वार्थ त्याग की सबसे बड़ी मिसाल जिसे सरकार भूल चुकी है।

जिन तीनों महान् विभूतियों का स्वयं अंतिम संस्कार किया। उसी स्थान पर फतेहगढ़ साहिब में गुरुद्वारा श्री ज्योति स्वरूप बना हुआ है जिसके बेसमैंट का नाम सिख समाज ने स्मृति स्वरूप दीवान टोडरमल जैन हॉल रखा है। टोडर मल की हवेली को जहाज महल के नाम से प्रसिद्ध है एवं फतेहगढ़ साहिब से एक किलोमीटर दूर है हवेली का रखरखाव गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास है लेकिन उसे भव्य बनाने की आवश्यकता है। पंजाब सरकार को चाहिए कि इस ऐतिहासिक हवेली को अपने कब्जे में लेकर इसे बड़े स्मारक के तौर पर विकसित करे ताकि आने वाली पीढ़ियों को उनके इतिहास से रूबरू करवाया जा सके। त्याग और बलिदान की इस गाथा को भी हमारे गौरवशाली इतिहास से गायब कर दिया गया।

–डॉ. पी. सी. कंठालिया
पूर्व प्रोफेसर एवं प्रमुख मृदा वैज्ञानिक
महाराणा प्रताप कृषि एवं
प्रो. विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने "आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान" का आगाज़ किया

आबूरोड, (निसं)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरूवार को ब्रह्माकुमारीज संस्था के आबूरोड स्थित शांतिवन परिसर में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान का वर्चुअल शुभारंभ किया। इसके साथ सात अभियानों को हरी झंडी दिखाई। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि त्याग और कर्त्तव्य भाव से करोडों देशवासी आज स्वर्णिम भारत की नींव रख रहे हैं। राष्ट्र की प्रगति से ही हमारी है कि दुनिया भारत को सही रूप में जाने। ऐसी संस्थाएं जिनकी एक अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति है, वे दूसरे देशों के लोगों तक भारत की सही बात को पहुंचाएं। भारत के बारे में जो अफवाहें फैलाई जा रही हैं, उनकी सच्चाई वहां के लोगों को बताएं, जागरूक करें, ये हम सबका कर्तव्य है। भारत की आध्यात्मिक सत्ता आप सभी ब्रह्माकुमारी बहनें इसी परिपक्वता के साथ निभाएं।

- **इसके साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सात अभियानों को हरी झंडी दिखाई**
- **'सबका साथ, सबका विकास और सबका प्रयास देश का मूलमंत्र बन रहा है'**
- **ब्रह्माकुमारीज संस्था के आबूरोड स्थित शांतिवन परिसर में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान का वर्चुअल शुभारंभ किया**
- **हमारा देश हमेशा से वसुधैव कुटुम्बकम की भावना वाला रहा है : मुख्यमंत्री गहलोत**

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रह्माकुमारीज संस्था के आबूरोड स्थित शांतिवन परिसर में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान का वर्चुअल शुभारंभ किया।

प्रगति है। यही भाव एक ताकत बन रहा है। सबका साथ, सबका विकास और सबका प्रयास देश का मूलमंत्र बन रहा है। हम ऐसी व्यवस्था बना रहे है। जिसमें भेदभाव की जगह ना हो। ब्रह्माकुमारीज संस्थान का प्रभाव पूरे विश्व में है। मुझे उम्मीद है आने वाले समय में इस अभियान में एक नयी उर्जा का संचार होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि इस अभियान में स्वर्णिम भारत के लिए भावना भी है और साधना भी है। अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियों के लिए इदं न मम् का भाव जागने लगता है तो समझिए हमारे संकल्पों के जरिए एक नए कालखंड का जन्म होने वाला है। एक नया सवेरा होने वाला है।

प्रधानमंत्री ने ब्रह्माकुमारी बहनों से आव्हान किया कि हमारा दायित्व

इस अवसर पर राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि हमारा देश हमेशा से वसुधैव कुटुम्बकम की भावना वाला रहा है। शांति, अहिंसा, एकता और सदभाव हमारे मूलमंत्र है। यह बहुत खुशी की बात है कि ब्रह्माकुमारीज के चार हजार केन्द्रों से इसे बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि बचपन से ही यहां आता रहा हूं। यहां दादियों ने मुझे मूलमंत्र दिया है कि जब भी तनाव हो तो तीन बार ओम शांति बोलना। यह संस्थान आने वाली पीढी को अच्छे संस्कार देने का कार्य कर रही है। लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने कहा कि यह अभियान स्वर्णिम भारत की झलक और आधुनिक भारत की छवि दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यहां की आध्यात्मिक जीवनशैली समाज को नई दिशा दिखा रही है। संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री जे किशन रेड्डी ने कहा कि अमृत महोत्सव के तहत ब्रह्माकुमारीज के आयोजनों से दुनिया को नया रास्ता मिलेगा। इसके तहत संस्थान का 15 हजार कार्यक्रमों के जरिए दस करोड़ लोगों तक पहुंचने का लक्ष्य रखा है।

गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज अच्छा काम कर रही है। आजादी के अमृत महोत्सव से जन-जन को लाभ मिलेगा। इस अभियान से समाज में अच्छा संदेश जाएगा, इसलिए ब्रह्माकुमारीज को बधाई देता हूं। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज संस्थान के अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी ने कहा कि सभी के जीवन मूल्यों का विकास हो उसके लिए हम सबको मिलकर कार्य करना चाहिए। संस्थान के महासचिव बीके निर्वैर, अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन तथा कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने भी अपने अपने विचार व्यक्त किये।

समारोह में राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र, संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी, फिल्म निदेशक सुभाष घई समेत कई लोग उपस्थित थे। ग्रेमी अवार्ड विनर रिक्की केज की ओर वीडियो एलबम भी रिलीज किया गया।

इन सात अभियानों का प्रधानमंत्री ने किया शुभारंभ : मेरा भारत स्वसथ भारत के तहत वैक्सीनेसन अभियान जिसमें गांव-गांव में लोगों के लिए वैक्सीन लगाने और जागरूक किया जायेगा। आत्मनिर्भर किसान में किसानों को यौगिक-जैविक खेती के प्रति जागरूक करने, महिलाएं नए भारत की ध्वजवाहक अभियान, 'अनदेखा भारत' साइकिल रैली, सड़क सुरक्षा के लिए देशभर में 1500 बाइक रैली, आबूरोड़ से दिल्ली जाने वाली 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' मोटरसाइकिल रैली रवाना व युवाओं को सशक्त बनाने के लिए 'बस यात्रा' और 'स्वच्छ भारत अभियान चलाया जायेगा। वही ब्रह्माकुमारी संस्था से प्रधानमंत्री के तीन बड़े आव्हान किये जिसमें नागरिकों में कर्तव्य भावना का विकास करें। भारत की सच्चाई को दूसरे देशों के लोगों तक पहुंचाए तथा आत्म निर्भर भारत को गति देवे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 21 जनवरी, 2022

माघ मास कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2078, मघा नक्षत्र प्रात: 9:43 तक, सौभाग्य योग दिन 3:04 तक, विष्टि करण प्रात: 8:52 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-धनु, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 9:43 से सूर्योदय तक है। भद्रा प्रात: 8:52 तक है। आज सौभाग्य सुंदरी व्रत, संकष्ट चतुर्थी और तिलकुटा चौथ व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 9:09 पर होगा। आज से राष्ट्रीय माघ मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 8:40 तक, लाभ-अमृत 8:40 से 11:19 तक, शुभ 12:38 से 1:57 तक, चर 4:36 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:55

मेष

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

वृष

परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। परिवार में सुसंदेश प्राप्त होंगे।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। आज अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

तुला

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

धनु

शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा नहीं रहेगा। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। अनावश्यक धन खर्च होगा। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है।

कुंभ

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मीन

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी।